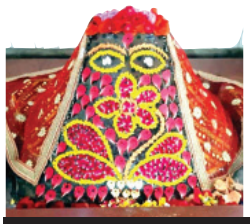

।। श्री गणेशाय नमः ।।

हिन्दी पाक्षिक Fort Nightly

Baat Hindustan ki

बात हिन्दुस्तान की

Baat Hindustan Ki

R N I No. : WBHIN / 2021 / 84049

● विक्रम संवत 2081 श्रावण शुक्ल पक्ष दशमी, 16-31 अगस्त 2024 , 16-31 August 2024, ● वर्ष 4 (Year-4), ● अंक 7 ● पृष्ठ 4 (Page-4) ● मूल्य रु. 2 (Price 2/-)

बांग्लादेश के 27% हिंदुओं में सिर्फ 9% क्यों बचे?

नई दिल्ली/अहमदाबाद : केंद्रीय गृह मंत्री अमित शहा ने बांग्लादेश में हिंदुओं पर हिंसा को लेकर बड़ा टिप्पणी की है। गुजरात के दौरे पर पहुंचे केंद्रीय गृह मंत्री ने अहमदाबाद में एक कार्यक्रम के दौरान कहा कि बांग्लादेश में विभाजन के वक्त 27 प्रतिशत हिंदू थे, आज वे नौ फीसदी हैं, बाकी के हिंदू कहां गए? शाह ने लोगों से पूछा और बांग्लादेश में हिंदुओं पर हिंसा को एक साजिश कर दिया है। गृह मंत्री ने कहा कि मैं अपने मुस्लिम भाइयों और बहनों को यह स्पष्ट करना चाहता हूं कि सीएए नागरिकता देने के लिए है, न कि नागरिकता छीनने के लिए है। उन्होंने कहा कि किसी की भी नागरिकता नहीं जाएगी क्योंकि सीएए हिंदू, बौद्ध, सिख, जैन शरणार्थियों को अधिकार देने के लिए है। कार्यक्रम में पड़ोसी देशों से धार्मिक प्रताड़ना के कारण भारत आए शरणार्थी, जो दशकों से अन्याय का सामना कर रहे थे।उन्हें शरणार्थी भाइयों-बहनों को के तहत नागरिकता प्रदान की गई। शाह ने कहा कि अब वे सम्मान के साथ अपना जीवन यापन कर

पाएंगे। शाह ने रविवार को अहमदाबाद में 188 हिंदू शरणार्थियों को नागरिकता प्रमाण पत्र सौंपें।

धर्म के आधार पर हुआ था विभाजन : गृह मंत्री शाह ने कहा कि सीएए इसलिए लागू किया गया क्योंकि आजादी के दौरान भारत का विभाजन धर्म के आधार पर हुआ था और पाकिस्तान, अफगानिस्तान और बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों पर अत्याचार किया गया, उनके परिवारों को विस्थापित किया गया, जिससे अमीर लोगों को भारतीय शहरों में सब्जी बेचने के लिए मजबूर होना पड़ा। विभाजन के बाद, कांग्रेस नेताओं ने पड़ोसी देशों से आने वाले हिंदू, बौद्ध, जैन और सिख शरणार्थियों को नागरिकता देने का वादा किया था, लेकिन चुनाव नजदीक आते ही वे इस फैसले से पीछे हट गए। जवाहरलाल नेहरू द्वारा 1947, 1948 और 1950 में किए गए वादे और महात्मा गांधी द्वारा किए गए आह्वान को भुला दिया गया, क्योंकि उन्हें (कांग्रेस) लगा कि अगर नागरिकता दी गई, तो इससे उनका वोट बैंक नाराज हो जाएगा। सीएए सिर्फ लोगों को नागरिकता देने के लिए नहीं है, यह लाखों लोगों को न्याय और अधिकार देने के लिए भी है। कांग्रेस और उसके सहयोगियों की तुष्टिकरण की राजनीति के कारण, शरण मांगने वाले लोगों को 1947 से 2014 तक न्याय नहीं मिला। उन्हें पड़ोसी देशों में प्रताड़ित किया गया क्योंकि वे हिंदू, बौद्ध, सिख या जैन थे, लेकिन उन्हें अपने देश में भी प्रताड़ित किया गया। इंडिया गठबंधन की तुष्टिकरण की राजनीति ने उन्हें न्याय नहीं दिलाया।

तुष्टिकरण के चलते नहीं दी नागरिकता : शाह ने कहा कि तुष्टिकरण के कारण लाखों-करोड़ों लोगों को नागरिकता से वंचित कर दिया गया। इससे बड़ा कोई पाप नहीं हो सकता। उन्होंने कहा कि बाकी लोग कहां गए? या तो उनका जबरन धर्म परिवर्तन किया गया या वे यहां शरण लेने के लिए भागे। क्या उन्हें अपने धर्म के अनुसार जीने का अधिकार नहीं है? अगर वे पड़ोसी देश में सम्मान के साथ नहीं रह सकते और हमारे देश में शरण लेते हैं, तो हमें क्या करना चाहिए? हम मूकदर्शक बनकर नहीं बैठ सकते। यह नरेंद्र मोदी सरकार है, आपको न्याय मिलेगा। उन्होंने देशभर के शरणार्थियों से कहा कि वे बिना किसी हिचकिचाहट के नागरिकता के लिए आवेदन करें क्योंकि इससे उनकी नौकरी या उनकी संपत्ति प्रभावित नहीं होगी क्योंकि उन्हें पूर्वव्यापी प्रभाव से नागरिकता प्रदान की जाएगी।

विपक्ष ने घुसपैठियों को घुसने दिया : केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने नागरिकता संशोधन अधिनियम (सीएए) पर बोलते हुए कहा कि विपक्ष ने घुसपैठियों को घुसने दिया। उन्हें गैरकानूनी तरीके से नागरिक बनाया लेकिन जिन लोगों ने कानून का पालन किया, उन्हें नागरिकता नहीं दी। पिछली सरकारों की तुष्टिकरण की राजनीति के कारण भारत में शरण लेने वालों को उनके अधिकारों और न्याय से वंचित किया गया। कार्यक्रम से पहले केंद्रीय मंत्री अमित शाह ने अहमदाबाद के लिए 1,000 करोड़ रुपये की विकास परियोजनाओं की शुरुआत की, लोगों से पौधे लगाने के अभियान में शामिल होने का अनुरोध किया।

कोलकाता डॉक्टर केस पर सुप्रीम कोर्ट ने लिया स्वत: संज्ञान, सीजेआई चंद्रचूड़ की बेंच करेगी सुनवाई

नई दिल्ली : सुप्रीम कोर्ट ने कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज में एक महिला जूनियर डॉक्टर के साथ रेप और हत्या के मामले का स्वतः संज्ञान लिया। चीफ जस्टिस डी वाई चंद्रचूड़, जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस मनोज मिश्रा की पीठ इस मामले की सुनवाई करेगी। ट्रेनी डॉक्टर के रेप एंड मर्डर केस के टाइटल से सुप्रीम कोर्ट ने सुनवाई के लिए केस को लिस्ट किया है। जानकारी के अनुसार यह केस सुनवाई के लिए तय मुकदमों की सूची में 66वें स्थान पर है। हालांकि, इसमें विशेष उल्लेख है कि पीठ इस केस को प्राथमिकता के आधार पर सुनेगी। यह खबर घटना के विरोध में इंडियन मेडिकल एसोसिएशन की तरफ से 24 घंटे की राष्ट्रव्यापी हड़ताल के एक दिन बाद आई है।

सुप्रीम कोर्ट के इस कदम का मतलब है कि अदालत बिना किसी औपचारिक याचिका के दायर किए जाने के अपने आप कानूनी कार्रवाई शुरू कर रही है। स्वत: संज्ञान लेना सुप्रीम कोर्ट को महत्वपूर्ण सार्वजनिक चिंता के मुद्दों को संबोधित करने की

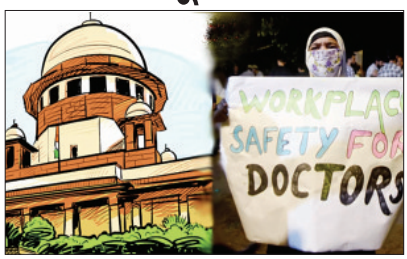

अनुमति देता है, खासकर तब जब उनमें मौलिक अधिकार और सुरक्षा की बात शामिल होती है। इस मामले में, पूरे देश में मेडिकल बिरादरी के मनोबल और सुरक्षा पर घटना के गंभीर प्रभावों के कारण अदालत की भागीदारी महत्वपूर्ण है। केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) जो ट्रेनी डॉक्टर के रेप और हत्या की जांच कर रही है। सीबीआई सरकारी अस्पतालत आरजी कर मेडिकल एंड कॉलेज और अस्पताल के पूर्व प्रिंसिपल डॉ संदीप घोष से लगातार तीसरे दिन पूछताछ कर रहा है। न्यूज एजेंसी ने एक अधिकारी के हवाले से कहा कि केंद्रीय एजेंसी ने उनसे घटना से पहले और बाद में किए गए कॉल की डिटेल देने के लिए भी कहा।

आरजी कर मेडिकल कॉलेज के एक्स प्रिंसिपल की जान को खतरा, कोलकाता डॉक्टर केस में किस राज के खुलने से डर रहे संदीप घोष?

रिपोर्ट में आगे कहा गया है कि सीबीआई घोष के कॉल रिकॉर्ड तक पहुंचने के लिए मोबाइल सर्विस प्रोवाइड से संपर्क करने पर विचार कर रही है। कहा जाता है कि घोष से लगभग 13 घंटे तक पूछताछ की गई।

कोलकाता हाई कोर्ट 13 अगस्त को मामले को कोलकाता पुलिस से सीबीआई को ट्रांसफर किया गया था। अब तक यह पाया गया है कि डॉक्टर के साथ रेप और हत्या के आरोपी संजय रॉय की पत्नी ने खलीफाट पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराई थी। पुलिस ने इस मामले में पूर्व बीजेपी सांसद लॉकेट चटर्जी और दो मशहूर डॉक्टरों को कथित तौर पर अफवाह फैलाने और महिला डॉक्टर की पहचान उजागर करने के लिए समन जारी किया है। अधिकारी ने बताया कि पुलिस ने घटना के बारे में गलत सूचना फैलाने के लिए 57 अन्य लोगों को भी सम्मन जारी किया है।

डिप्टी कमिश्नर ने की भतीजी से लव मैरिज

पटना : बेगूसराय के उप नगर आयुक्त शिव शक्ति कुमार ने अपनी भतीजी सजय सिंधू के साथ प्रेम विवाह कर लिया है। सजय के परिवार ने पहले अपहरण का आरोप लगाया था, जिसे दोनों ने निराधार बताया है। उन्होंने पुलिस से सहयोग और सुरक्षा की मांग की है। मामला काफी चर्चित हो गया है। सजय के चाचा अरुण कुमार राय ने नगर निगम के मेयर पिंकी देवी और नगर आयुक्त सत्येंद्र कुमार सिंह से मिलकर यह शिकायत की थी। उन्होंने बताया कि शिव शक्ति रिश्ते में उनके चचेरे भाई लगते हैं और उन्होंने उनकी बेटी का अपहरण कर लिया है। मेयर ने इस मामले की जांच के लिए तीन सदस्यीय टीम भी गठित कर दी थी। हालांकि, अब शिव शक्ति और सजय दोनों ने सामने आकर अपनी बात रख दी है। उन्होंने बताया कि उन्होंने प्रेम विवाह किया है और उनका अपहरण नहीं हुआ है। सजय ने मीडिया से बात करते हुए कहा कि प्रेम करना किसी का व्यक्तिगत निर्णय है और इसमें किसी का दखल नहीं होना चाहिए। हम वैशाली पुलिस से कहना चाहते हैं कि हमारे खिलाफ जो एफआईआर दर्ज की गई है और जो हमारा अपहरण का केस दर्ज हुआ है उसमें तनिक भी सच्चाई नहीं है, वो गलत है। अगर हमारा अपहरण हुआ होता तो हम आपके सामने थोड़ी ना होते। सजय ने आगे बताया कि प्रेम विवाह के बाद उनके और शिव शक्ति को परेशान किया जा रहा है। सजय ने कहा कि लव मैरिज करने के बाद उन्होंने कई तरीकों से परेशान करना शुरू कर दिया। हमारे वैवाहिक जीनव में मुश्किलें पैदा करने की कोशिश की गई हैं। शव शक्ति ने भी इस मामले पर अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि मुझे वैशाली प्रशासन से कहना है कि हम लोगों ने प्रेम विवाह किया है कोई अपहरण नहीं हुआ है। यहां अनैतिक कार्यों का कोई मुद्दा नहीं है। हमें बस यही सहयोग चाहिए कि वो हमारा सहयोग करें और हमें सुरक्षा मुहैया कराएं। ताकि हम लोग खुद को सुरक्षित महसूस कर सकें। बता दें कि शिव शक्ति और सजय दोनों वैशाली जिले के एक ही गांव के रहने वाले हैं। दोनों रिश्ते में चाचा-भतीजी हैं। इस अनोखी प्रेम कहानी ने पूरे इलाके में सनसनी फैला दी है।

अब राज्य में टोटो रिक्शा पर अनुशासित करने का कानून जल्द ही शुरू : परिवहन मंत्री

कोलकाता (धर्मवीर कुमार सिंह) : जब भी आप सड़कों पर गाड़ी लेकर निकलते हैं तो देखा जाता है की सबसे बड़ी समस्या खासकर हावड़ा और हुगली जैसे इलाकों में टोटो चालकों के द्वारा होती है अब से लगाम लगाने के लिए सड़कों पर अवांछित ट्रैफिक जाम से बचने के लिए राज्य परिवहन विभाग द्वारा बड़ी पहल की गई है। वहीं यात्रियों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए टोटो चालकों को विशिष्ट रजिस्ट्रेशन से गुजरना होगा. राज्य के परिवहन मंत्री स्नेहाशीष चक्रवर्ती ने इसकी घोषणा की है. टोटो को अनुशासित करने का कानून जल्द ही शुरू हो रहा है. टोटो या ई-रिक्शा को सार्वजनिक परिवहन के अंतिम पंक्ति के वाहन के रूप में पेश किया गया था। टोटो को मूल रूप से यात्रियों को मुख्य सड़क से उनके दरवाजे तक पहुंचाने के लिए लाया गया था। टोटो के बाजार में आने के बाद कई बेरोजगार युवाओं को टोटो चालक के रूप में रोजगार मिला है। लेकिन वर्तमान में जिस तेजी से टोटो की संख्या बढ़ी है और जिस तरह से उचित नियमों के अभाव के कारण सड़कों पर ट्रैफिक जाम की स्थिति पैदा हो रही है, उससे सीख लेने के लिए राज्य सरकार का परिवहन विभाग ये नये दिशानिर्देश ला रहा है. इस संबंध में परिवहन मंत्री स्नेहाशीष चक्रवर्ती ने कहा, पूरे बंगाल में करीब 10 लाख टोटो हैं. विशिष्ट रूट परमिट नहीं होने के कारण टोटो पर नियंत्रण करना मुश्किल हो गया है. कुछ मामलों में, परिवहन विभाग में शिकायत दर्ज की गई है कि बस चालकों से लेकर एम्बुलेंस चालकों तक सभी को अवांछित टोटो की भीड़ के कारण समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इसीलिए राज्य सरकार स्थानीय नगर पंचायत और पुलिस प्रशासन के सहयोग से एक अनुशासित नियम लाने जा रही है. जहां हर टोटो चालक को वाहन चलाने के लिए रजिस्ट्रेशन कराना होगा. इससे सड़क पर अवांछित टोटो की भीड़ को नियंत्रित करने में मदद मिलेगी. परिवहन मंत्री ने यह भी कहा कि कई मामलों में एक व्यक्ति को कई टोटो खरीदकर बाजार में किराया वसूलते देखा जाता है. ऐसे में यह लागू नहीं होगा. एक व्यक्ति के पास एक टोटो हो सकता है. टोटो चलाने की यह व्यवस्था मुख्य रूप से गरीब और बेरोजगार युवाओं के लिए है, ताकि कोई भी टोटो चालक बेरोजगार न हो.

अब देखना यह है कि आखिर यह नियम कब तक लागू होता है ? सरकारी आंकड़ों के अनुसार बंगाल में टोटो 10 लाख बताई जा रहा है , लेकिन यह आंकड़ा उससे भी कहीं अधिक है। बंगाल में बेरोजगारी चरण सीमा पर है और आज के दौर में पढ़े-लिखे बेरोजगार भी इसे चला कर अपना रोजी-रोटी का जुगाड़ करते हैं।

हिंदू अल्पसंख्यकों निरकुंश अत्याचार के विरुद्ध राजनीतिक पार्टियां मौन क्यों?

कोलकाता (शेख हबीब) : बांग्लादेश में तख्ता पलट के बहाने से हिंदू अल्पसंख्यकों पर जिस तरह का निरकुंश अत्याचार और उनकी हत्याएं हो रही है, उस पर आज पूरा विश्व मौन धारण किए हुए है।क्यों? इसलिए की वहा अल्पसंख्यक हिंदू है। आज कहा गए वो लोग जो मानव अधिकारों का हनन की दुहाई देते हुए थकते नहीं थे। भारत में अगर गलतफहमियों से छोटी मोटी घटना भी अगर हो जाए तो तमाम विपक्षी पार्टियां संविधान खतरे में है और मानव अधिकारों के हनन होने की दुहाई देकर पूरे विश्व पटल पर अपनी आवाज बुलंद कर देते है और विश्व के कई देश भी इस पर स्पष्टीकरण देने की मांग करते हुए अपनी चिंता व्यक्त करते है।मगर अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है की न तो कोई विश्व का देश, न मानवाधिकार वाले और न ही कोई राजनीतिक दल इस घटना पर अपना मुंह तक नही खोल रहा है। आखिर ऐसा क्यों? जानना चाहती है जनता।

करपात्री जी महाराज का 117 वां प्रकटय महोत्सव

कोलकाता : सनातन धर्म सम्राट करपात्री जी महाराज का 117 वां प्रकटय महोत्सव पीठ परिषद आदित्य वाहिनी आनंद वाहिनी पश्चिम बंगाल के तत्वाधान में संघ सभागार 217, रविंद्र सारणी, कोलकाता में डॉक्टर विट्ठल दास मूंधड़ा (अध्यक्ष सिंपलेक्स ग्रुप) विशिष्ट समाज सेवी एवं उद्योगपति के अध्यक्षता में मनाया गया। डा रविंद्र भट्टाचार्य पूर्व अध्यक्ष संस्कृत विभाग कोलकाता विश्वविद्यालय ने अपने उद्ध घोषणा में धर्म सम्राट स्वामी करपात्री जी महराज के द्वारा विरचित ग्रंथ का एवं उनके जीवन पर प्रकाश डाला। पूर्व करनल राजीव श्रीवास्तव (रक्षा कमेंटेटर) ने राष्ट्र रक्षा के लिए अभियान चलाने के लिए लोगों को अपील किया । डॉ राजश्री शुक्ला हिंदी विभाग अध्यक्ष कोलकाता विश्वविद्यालय ने कहां उनके जैसा सिद्ध पुरुष, संत, राष्ट्र भक्त ना कोई हुआ ना आगे होगा। श्री प्रेमचंद झा जी ने उनके जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा पूज्य करपात्री जी महाराज का जन्म प्रतापगढ़ जिला के भटनी गांव में वेद पार्टी ब्राह्मण राम निधि ओझा एवं शिवरानी के तृतीय पुत्र के रूप में श्रावण शुक्ल द्वितीया सन 1907 ईस्वी में हुआ था।

वह सिर्फ हाथ में ही भिक्षा ग्रहण कर करते थे कोई संचय नही करते थे ,इसलिए उनका नाम करपात्री जी महाराज पड़ा। देश में सनातनियों की अवस्था देखकर 1940 ईस्वी में धर्म संघ का स्थापना की एवं 1948 ईस्वी में राजनीतिक पार्टी राम राज्य परिषद का गठन किया । बस पार्टी के कई सांसद और विधायक भी चुने गए थे। गोरक्षा के लिए देश में उनके आह्वान कर 1966 ईस्वी में जंतर मंतर दिल्ली पर लगभग 15 लाख लोग जमा हुए , लेकिन तत्कालीन इंदिरा गांधी की सरकार ने निहत्थे हजार से अधिक गो भक्तों को मरवा दिया। पूज्य करपात्री जी महाराज को 52 दिन तक तिहाड़ जेल में रखा गया उनके साथ तिहाड़ जेल में पुरी के जगदगुरु शंकराचार्य स्वामी निश्चलानंद सरस्वती जी महाराज एवं अन्य राष्ट्रभक्ति भी थे।

खूंखार कैदियों खोलकर उसके द्वारा पूज्य धर्म सम्राट करपात्री जी महाराज पर हमला करवाया गया।

इस वेदना के कारण काशी में 1982 ईस्वी में अपना शरीर त्याग दिए। जब पूरे देश में धर्म सम्राट स्वामी करपात्री जी महाराज द्वारा स्थापित रामराज्य परिषद का वर्चस्व था तब इंदिरा गांधी ने आकर निवेदन किया जो आप कांग्रेस पार्टी को आशीर्वाद दें और सरकार बनते ही गौ हत्या देश में कानून लाकर बंद करवा देंगे , लेकिन सरकार बनते ही इंदिरा गांधी ने पूज्य स्वामी जी को दिए अपने वचन से मुकर गई। धर्म सम्राट करपात्री जी के हृदय में बहुत दुख हुआ ,जिसका परिणाम स्वरूप इंदिरा गांधी का मौत हुआ पूज्य धर्म सम्राट स्वामी करपात्री जी रात्रि मे 2:00 बजे से पहले जाग जाते थे । शीर्षासन पर दुर्गा सप्तशती का पाठ करते थे । त्रिकाल संध्या करते थे। पूजन पठन पठान एवं प्रवचन का क्रम हमेशा चलता रहता था । राष्ट्र चिंतन में अधिक समय देते थे। उनका प्रवचन वेद शास्त्र सम्मत एवं राष्ट्र पर ही होता था, वही प्रवचन उनके शिष्य जगदगुरु शंकराचार्य गोवर्धन पीठाधीश्वर स्वामी निश्चलानंद सरस्वती जी महाराज में देखने को मिलता है । उनका उद्घोष था- *धर्म की जय हो, अधर्म का नाश हो, प्राणियों में सद्भावना हो, विश्व का कल्याण हो , गौ माता की जय हो, गौ हत्या बंद हो।* भारत अखंड हो । कार्यक्रम का संचालन श्री राजेंद्र सोनी ने किया इससे पूर्व पश्चिम बंगाल में श्रीमती निभा प्रकाश के द्वारा आसनसोल एवं दुर्गापुर में वृक्षारोपण एवं धार्मिक कार्यक्रम कराया गया श्री देवाशीष गोस्वामी एवं श्रीमती पिंकी गोस्वामी के माध्यम से शंकराचार्य मठ हावड़ा में रुद्राभिषेक एवं पूजन का कार्यक्रम अभिजीत भट्टाचार्य, सैकत बसु, विदेश चक्रवर्ती, प्रभात मंडल, टूटन घोष, नरेंद्र कर्मकार, पंपा बाग , रूबी सरकार एवं अन्य के द्वारा हुआ। हावड़ा में श्री प्रेमचंद्र झा जी के द्वारा वृक्षारोपण कार्यक्रम किया गया।

अरुणाचल प्रदेश के नाग मंदिर का रहस्य

अरुणाचल (जयकिशोर) : उल्लासमय भक्तों के गगनभेदी जयकारों से पूरा वातावरण गूंजा जिला वेस्ट कामीगं अरुणाचल प्रदेश के नाग मंदिर। सीमा सड़क संगठन भारत में एक सड़क निर्माण कार्यकारी बल है जो भारत के सीमावर्ती क्षेत्रों में प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करते हुए सड़क मार्गों एवं पुलों का निर्माण कार्य तथा व्यवस्थापन का कार्य करता है। 1960 मे सड़क निर्माण कार्य हेतु पहाड़ को तोड़कर सड़क का निर्माण हुआ था, जिसमें विशालकाय नाग का मृत्यु हो चुका था, जिसके चलते अनेको तरह से समस्याओं का सामना और प्राय:समय स्वप्न मे नाग सर्प का मृत्यु होने की बात और अधिक व्याकुल कर रहा था, जिसके चलते सीमा सड़क संगठन अपने नेतृत्व मे तोड़े हुए पहाड के एक अंश मे, पहाड के उपरी भाग पर नाग मंदिर स्थापित कर पुजा अर्चना की। उस समय से वर्तमान समय तक सड़क निर्माण कार्य सुचारु रूप से चलने लगा। पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष भी भारी संख्यां में भक्तों का तांता लगा। मुख्य अभियंता ब्रिग्रेडियर रमण कुमार, 14 बी आर टी एफ कामाडंर श्री सत्येंद्र प्रसाद,कमान अधीकारी 91आर सी सी श्री हर्ष श्रीवास्तव,के दीशा निर्देश से व अन्य ग्रीफ कर्मी और सि पी एल के सहयोग से इस वर्ष-नाग पचंमी के पहला दिन कलश यात्रा, दुसरे दिन 12 हजार से अधिक लोगों का भंडारा व भजन-कीर्तन सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। महीला शौचालय और स्नानागार का उद्घाटन 91आर सी सी के प्रथम महीला लेफ्टिनेंट कामाण्डर निकिता अग्रवाल (रिटायर्ड) के कर कमलो द्वारा नाग पंचमी के दिन नाग मंदिर समिति को सौंपा गया।

स्वतंत्रता दिवस के मौके पर दक्षिण पूर्व रेलवे के महाप्रबंधक परेड का निरीक्षण करते हुए।

स्वतंत्रता दिवस के मौके पर पूर्व रेलवे के महाप्रबंधक परेड का निरीक्षण करते हुए।

रक्षाबंधन भाई बहन के रिश्ते का पवित्र बंधन

रक्षाबन्धन भारतीय धर्म संस्कृति के अनुसार रक्षाबन्धन का त्योहार श्रावण माह की पूर्णिमा को मनाया जाता है। यह त्योहार भाई-बहन को स्नेह की डोर में बांधता है। इस दिन बहन अपने भाई के मस्तक पर टीका लगाकर रक्षा का बन्धन बांधती है, जिसे राखी कहते हैं। यह एक हिन्दू व जैन त्योहार है जो प्रतिवर्ष श्रावण मास की पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। श्रावण (सावन) में मनाये जाने के कारण इसे श्रावणी (सावनी) भी कहते हैं।रक्षाबन्धन में राखी या रक्षासूत्र का सबसे अधिक महत्त्व है। राखी कच्चे सूत जैसे सस्ती वस्तु से लेकर रंगीन कलावे, रेशमी धागे, तथा सोने या चाँदी जैसी मँहगी वस्तु तक की हो सकती है। रक्षाबंधन भाई बहन के रिश्ते का प्रसिद्ध त्योहार है, रक्षा का मतलब सुरक्षा और बंधन का मतलब बाध्य है। रक्षाबंधन के दिन बहने भगवान से अपने भाईयों की तरक्की के लिए भगवान से प्रार्थना करती है। राखी सामान्यतः बहनें भाई को ही बाँधती हैं परन्तु ब्राह्मणों, गुरुओं और परिवार में छोटी लड़कियों द्वारा सम्मानित सम्बंधियों (जैसे पुत्री द्वारा पिता को) भी बाँधी जाती है। कभी-कभी सार्वजनिक रूप से किसी नेता या प्रतिष्ठित व्यक्ति को भी राखी बाँधी जाती है। रक्षाबंधन के दिन भाई अपने बहन को राखी के बदले कुछ उपहार देते है।हिन्दू धर्म के सभी धार्मिक अनुष्ठानों में रक्षासूत्र बाँधते समय कर्मकाण्डी पण्डित या आचार्य संस्कृत में एक श्लोक का उच्चारण करते हैं, जिसमें रक्षाबन्धन का सम्बन्ध राजा बलि से स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। (यह श्लोक रक्षाबन्धन का अभीष्ट मन्त्र -

येन बद्धो बलिराजा दानवेन्द्रो महाबल:। तेन त्वामपि बध्नामि रक्षे मा चल मा चल।

अर्थात् जिस रक्षासूत्र से महान शक्तिशाली दानवेन्द्र राजा बलि को बाँधा गया था, उसी सूत्र से मैं तुझे बाँधता हूँ। हे रक्षे (राखी)! तुम अडिग रहना (तू अपने संकल्प से कभी भी विचलित न हो।)19 अगस्त 2024 की सुबह से लेकर रात 8 बजकर 40 मिनट तक सर्वार्थ सिद्धि योग बना रहेगा। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, सर्वार्थ सिद्धि योग में शुभ कार्य करने से हर मनोकामना पूरी होती है।

तर्क रहें और साइबर ठगी से बचें : पुलिस आयुक्त

हावड़ा (मधुमित्ता) : सिटी पुलिस के खुफिया विभाग की ओर से शिवपुर पुलिस लाइन में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान खो चुके मोबाइल को उनके मालिकों को लौटा दिया गया. मौके पर पुलिस आयुक्त प्रवीण त्रिपाठी सहित सिटी पुलिस के आला अधिकारी उपस्थित थे. कार्यक्रम में 175 लोगों को उनके मोबाइल लौटाये गये. इस दौरान सीपी ने वहां उपस्थित लोगों को साइबर ठगी से बचने की सलाह दी. उन्होंने कहा कि दिन-प्रतिदिन साइबर ठगी के मामले बढ़ रहे हैं. निश्चित तौर पर पुलिस पीड़ितों के मदद के लिए तैयार है, लेकिन लोगों को भी सचेत रहना होगा। उन्होंने कहा कि अनजान नंबर से व्हाट्सअप पर अनजान नंबर से आने वाले मैसेज को क्लिक करने से बचें. किसी भी प्रलोभन में नहीं पड़ें. किसी के बहकावे में आकर मोबाइल फोन पर ऐप डाउनलोड नहीं करें. नहीं करें. व्हाट्सअप पर अनजान नंबर से आने वाले मैसेज को क्लिक करने से बचें. किसी भी प्रलोभन में नहीं पड़ें. किसी के बहकावे में आकर मोबाइल फोन पर ऐप डाउनलोड नहीं करें. ओटीपी भी शेयर नहीं करें. अगर ठगी का शिकार होते हैं, तो बिना देर किये पुलिस थाने व साइबर क्राइम थाने में जाकर शिकायत दर्ज करायें। पुलिस हमेशा मदद के लिए तैयार है।

ऐसा दिव्य धाम जहां देवाधिदेव ने माता पार्वती को दिया था 'अमरत्व' होने का मंत्र!

संघमित्रा सक्सेना : अमरनाथ धाम को पौराणिक मान्यताओं में कहा जाता है कि माता पार्वती को अमरत्व का मंत्र भगवान भोले नाथ ने इसी स्थान पर दिया था। आध्यात्मिक और सांस्कृतिक वातावरण की बात होती है तो विश्व में भारत को पहला ऐसा स्थान मिलता है जहां की संस्कृति और परंपराओं को दुनिया अनुसरण करती है। भारत की वसुधा को माता का दर्जा दिया गया है। यहां के खूबसूरत तीर्थ स्थल दुनिया को अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

ऐसा ही एक धाम मृतलोक के स्वर्ग के रूप में लोकप्रिय व बेहद खूबसूरत राज्य कश्मीर में समुद्रतल से 13,600 फुट की ऊँचाई पर अवस्थित अमरनाथ धाम देवाधिदेव शिव का ऐसा दिव्य धाम है जहाँ पावन गुफा में चंद्र कलाओं की गति से निर्मित होने वाला हिमलिंग भारत की सनातन हिन्दू आस्था का एक ऐसा चमत्कारी प्रमाण है। जिसे शीश नवाने के लिये प्रतिवर्ष आषाढ़ पूर्णिमा से श्रावणी पूर्णिमा तक पूरे सावन महीने में लाखों हिन्दू धर्मावलम्बी दूर-दूर से आते हैं। भिन्न-भिन्न मनोकामनाओं को लेकर भक्त भगवान भोले शंकर से अपनी दिल की बात कहते हैं। प्राकृतिक हिम से निर्मित होने के कारण इसे स्वयंभू हिमानी शिवलिंग भी कहा जाता है।

क्या है रहस्य ?

अमरनाथ धाम वैसे तो अनगिनत रहस्यों से जुड़ा है। माना जाता है कि भगवान शिव की स्थायी निवास यहीं था। हिमालय में भगवान शिव आज भी प्रवास करते है। यहीं से अपने भक्तों के दुखों को दुर करते हैं। धाम में सत्संग करने वाले व्यास शंकर दास ने बताया कि इस गुफा की परिधि लगभग डेढ़ सौ फुट है और इसमें एक स्थान से ऊपर से टपकने वाले बर्फीले जल बिन्दुओं से लगभग दस फुट लंबा शिवलिंग बनता है। चन्द्रमा के आकार घटने-बढ़ने के साथ-साथ इस बर्फीले

हिमलिंग का आकार भी घटता-बढ़ता रहता है। श्रावण पूर्णिमा को यह अपने पूरे आकार में आ जाता है और अमावस्या तक धीरे-धीरे छोटा होता जाता है। बाबा बर्फानी के इस दिव्य धाम की सबसे आश्चर्यजनक बात यह है कि यह शिवलिंग ठोस बर्फ का बना होता है, जबकि गुफा में आमतौर पर कच्ची बर्फ ही होती है जो हाथ में लेते ही भुरभुरा जाती है।

क्या कहते हैं हिन्दु धर्म ग्रंथ ?

हिन्दु महाग्रंथों में देवाधिदेव यानि देवो के देव कहा गया है इसका भावार्थ है कि भगवान शिव समस्त देवताओं के मार्गदर्शक हैं। उन्हें संघारकर्ता भी कहा जाता है जैसे भगवान विष्णु को पालनहार कहा जाता है, भगवान ब्रह्मा को सृष्टि के रचियता के रूप में जाना जाता है। भगवान शंकर सबसे सरल और करुणामयी है। उन्होंने मोह माया और काम लोभ पर विजय प्राप्त की है। ज्ञात हो कि हिन्दू धर्म ग्रंथों में अमरनाथ धाम को तीर्थों का तीर्थ कहा गया है क्योंकि इसी दिव्य धाम में भगवान शिव ने सर्वप्रथम माँ पार्वती को अमरत्व का रहस्य बताया था जिसे सुनकर गुफा में मौजूद शुक-शिशु शुकदेव ऋषि के रूप में अमर हो गये। गुफा में आज भी श्रद्धालुओं को कबूतरों का एक जोड़ा दिखाई दे जाता है, जिन्हें अमर पक्षी बताया जाता है। शास्त्रीय मान्यता के अनुसार काशी में दर्शन से दस गुना, प्रयाग से सौ गुना और नैमिषारण्य से हजार गुना पुण्य देने वाले श्री बाबा अमरनाथ के दर्शन हैं। माना जाता है कि सबसे पहले भृगु ऋषि ने बाबा अमरनाथ का दर्शन किया था। पौराणिक कथा के मुताबिक, आदि युग में एक बार कश्मीर की घाटी जलमग्न हो गयी थी। उसने एक बड़ी झील का रूप ले लिया था। तब धरती के प्राणियों की रक्षा के लिए ऋषि कश्यप ने इस जल को अनेक नदियों और छोटे-छोटे जलस्रोतों के द्वारा बहा दिया। ऋषि कश्यप ने जीव जन्तुओं और कश्मीर के प्राणियों की रक्षा की थी। वहां के हालात स्थिर होने के कुछ समय बाद ऋषि भृगु ने हिमालय पर्वत की यात्रा की थी।

मान्यता है कि भ्रमण कर रहे एवं वहां के वातावरण में मग्न भृगु ऋषि ने एकाएक भगवान शंकर की बर्फीली शिवलिंग के दर्शन किए थे। पहले आश्चर्य हुआ बात में देखा की शिवलिंग घट और बढ़ रही है। ऐसी क्रिया देख उन्हें शंका हुई। उन्होंने वहा कुछ समय बिताय और भगवान भोलेनाथ की आराधना की। उन्हें अहसास हो गया कि यही हमारे देवाधिदेव महादेव की लीला है। मान्यता है कि उनके बाद से ही यह स्थान शिव आराधना का प्रमुख देवस्थान बन गया। आज भी अनगिनत तीर्थयात्री अनेक कष्ट सह कर शिव के इस अद्भुत स्वरूप के दर्शन के लिए इस दुर्गम तीर्थ की यात्रा पर आते हैं और यहां आकर एक शाश्वत अध्यात्मिक शांति प्राप्त करते हैं। लिंग पुराण में इस स्थान का वर्णन मिलता है: लिंग पुराण में 12वें अध्याय के 151वें श्लोक में भगवान शिव की स्तुति में अमरेश्वर का उल्लेख किया गया है, जिसका अर्थ है अमरनाथ जो अमरत्व का स्वमित्व रखते हों वो अमरनाथ धामका उल्लेख मिलता है। इसके अलावा 12 वीं शताब्दी में कल्हण द्वारा की लिखित राजतरंगिनी में 267वें श्लोक में इसका उल्लेख मिलता है कि कश्मीर के राजा बर्फीली शिवलिंग की पूजा करने हमेशा जाते थे। अनेत तथ्यों व साक्ष्यों से जुड़ा है अमरनाथ। अमरनाथ में श्रावण मास के अवसर पर लाखों भक्तों की उपस्थिति होती है। इन धर्मग्रंथों के अतिरिक्त बृंगेश संहिता और नीलमत पुराण आदि में भी अमरनाथ तीर्थ का उल्लेख मिलता है।

16वीं शताब्दी से जुड़ी कहानी !

बूटा मालिक नामक एक मुस्लिम गड़रिये ने 16वीं शताब्दी में अमरनाथ धाम को लेकर प्रमाणित किया था कि मैं उसी पहाड़ पर बकरियां चराने जाता था, मैने वहां भगवान शिव के कई साक्ष्य देखे हैं। उनकी शिवलिंग का साइज घटता और बढ़ता रहता है। इस बात की आशंका होगी कि आखिर जहां ऑक्सीजन की कमी हो वही चरवाहा कैसे जाएगा।

लॉरेंस नामक अंग्रेस ने अपनी किताब वैली ऑफ कश्मीर में जिक्र किया है। लारेंस ने अपनी पुस्तक में लिखा, प्रारंभ में कश्मीरी ब्राह्मण अमरनाथ की तीर्थ यात्रा करने आये श्रद्धालुओं को अमरनाथ गुफा की यात्रा कराते थे लेकिन बाद में कुछ विशेष परिस्थिति में यह जिम्मेदारी बूटा मालिक नामक एक मुस्लिम गड़रिये ने संभाल ली थी। आज भी उसके वंशज गाइड बनकर यहां आने वाले तीर्थयात्रियों को अमरनाथ गुफा की यात्रा कराते हैं। आज भी अमरनाथ का चौथाई चढ़ावे का हिस्सा इसी गड़रिए को मिलता है।

इतिहासकारों के मुताबिक, पहले इस दुर्गम तीर्थ की यात्रा पर साधु-संत और सामाजिक दायित्वों से निवृत गृहस्थ लोग ही जाते थे, क्योंकि इस अत्यंत कठिन तीर्थयात्रा से वापस लौटना बेहद सौभाग्य की बात माना जाता था। 14वीं शताब्दी से लेकर लगभग 300 वर्षों तक विदेशी इस्लामी आक्रांता द्वारा लगातार कश्मीर पर आक्रमण करते जा रहे थे जिसके परिणाम स्वरूप इस अवधि में अमरनाथ की यात्रा बाधित रही। 18वीं शताब्दी में यह यात्रा फिर से शुरू हुई। हालांकि वर्ष 1991 से लेकर 1995 के बीच एक बार फिर से कुछ अरसे के लिए अमरनाथ यात्रा को स्थगित कर दिया गया था क्योंकि उस समय अमरनाथ यात्रियों पर आतंकी हमले की आशंका बहुत ज्यादा बढ़ गयी थी।

रात को देर से सोने की आदत शरीर को पहुंचाती हैं नुकसान, हो सकती हैं गम्भीर बीमारियां!

आजकल लोग मोबाइल चलाने, चैटिंग करने, फिल्में देखने की वजह से अक्सर देर रात तक जगते रहते हैं। हमारे शरीर को जिस तरह पानी, हवा और खाने की जरूरत होती है। ठीक वैसे ही शरीर सही तरीके से काम कर सके इसके लिए अच्छी नींद की जरूरत होती है। शरीर को अगर पर्याप्त नींद न मिले तो कई तरह की शारीरिक और मानसिक समस्याएं हो सकती हैं। पर्याप्त नींद न लेने की वजह से आपको अन्य लोगों के मुकाबले बीमारियों का खतरा ज्यादा रहता है। 2010 में हुई एक रिसर्च में ये बात सामने आई है कि रात को देर से सोने वालों को जल्दी सोने वालों की तुलना में मानसिक बीमारियों का खतरा ज्यादा रहता है। अगर आप भी देर रात मोबाइल देखने, लैपटॉप चलाने और किसी कारण से रात को देर तक जागते हैं, तो आपको ये आदत बदलने की जरूरत है। आइए जानते हैं रात को देर से सोने से शरीर को होने वाली

बीमारियों के बारे में।

हार्ट प्रॉब्लम का खतरा– सीडीसी के मुताबिक रात को देर से सोने के कारण हार्ट प्रॉब्लम का खतरा कई गुना बढ़ जाता है। रात को देर से सोने के कारण ब्लड प्रेशर हाई होता है, जिससे स्ट्रोक और हार्ट प्रॉब्लम जैसी खतरनाक बीमारी हो सकती है।

इम्यूनिटी होती है कमजोर– कम नींद लेने की समस्या हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता को कमजोर बनाने का काम करती है। सीडीसी के मुताबिक यदि कोई व्यक्ति पर्याप्त मात्रा में नींद नहीं लेता है तो उसके अंदर इंफेक्शन का खतरा तेजी से बढ़ता है। ऐसे लोग बीमारियों की चपेट में भी जल्दी आते हैं।

यौन क्षमता होती है प्रभावित– महिलाओं की नींद को यौन इच्छा और उत्तेजना से जोड़ा गया है। अगर कोई महिला रात को देर तक जागती है, तो उसकी यौन क्षमता कम हो जाती है। वहीं, पर्याप्त नींद लेने वाली महिलाओं की यौन क्षमता अच्छी होती है।

डायबिटीज का कारण–

भारत में डायबिटीज के मरीज लगातार बढ़ रहे हैं। डायबिटीज का एक मुख्य कारण पर्याप्त नींद न लेना है। दरअसल, रात को 7 से 8 घंटों की नींद लेने से ब्लड शुगर के नियंत्रण में सुधार करने में मदद मिल सकती है। जिससे डायबिटीज होने का खतरा कम होता है।

कैंसर का खतरा– इन दिनों देश में कैंसर के मरीजों में लगातार इजाफा हो रहा है। कैंसर का एक मुख्य कारण पर्याप्त नींद न लेना है। एक रिसर्च के मुताबिक रात को देर तक जागने वाले लोग अक्सर जंक फूड्स, चाय और सिगरेट आम लोगों के मुकाबले में ज्यादा लेते हैं, जिसके कारण कैंसर का खतरा कई गुणा तक बढ़ जाता है।

अगर आप किसी भी तरह की स्वास्थ्य समस्या से जूझ रहे हैं या आपको रात को सोने में किसी तरह की समस्या होती है तो डॉक्टर से संपर्क करें। ध्यान रखें कि नींद न आने की समस्या का कनेक्शन सीधे आपके दिल, दिमाग और शरीर से है।

मलायका अरोड़ा का फिर से हुआ 'प्यार'!

मलायका ने सोशल मीडिया पर समुद्र तट का नजारा और एक शख्स की तस्वीर शेयर की, जिसका चेहरा धुंधला है। इस फोटो ने अफवाहों को हवा दे दी है कि क्या वह फिर से डेटिंग कर रही है। मलायका अरोड़ा ने अर्जुन कपूर के साथ ब्रेकअप की खबरों के बीच फिर से प्यार की गिरफ्त में पड़ जाने की अफवाहों को हवा दे दी है। 'छैयां छैयां गर्ल' ने हाल ही में स्पेन में छुट्टियां मनाई और उसने इस ट्रिप की तस्वीरें सोशल मीडिया पर जम कर शेयर की हैं। कुछ तस्वीरों में वह बिकिनी पहने नजर आई और ट्रिप के दौरान उसने वैस्ट फूड का भी आनंद लिया लेकिन एक फोटो में लोगों को उसके खाने के अलावा और भी बहुत कुछ दिख गया। दरअसल, मलायका के साथ कोई अनजाना आदमी दिखा, जिसे लेकर चर्चा शुरू हो गई है। मलायका ने भोजन से भरी प्लेट, समुद्र तट का नजारा और एक शख्स को तस्वीर शेयर की, जिसका चेहरा धुंधला है। इस फोटो ने अफवाहों को हवा दे दी है कि क्या यह फिर से डेटिंग कर रही है। हालांकि, इसकी सच्चाई वही बता सकती है।

घर पर पार्टी रखी थी। इसमें कई सितारे शामिल हुए लेकिन मलायका कहीं नजर नहीं आई। इतना ही नहीं, हर बार की तरह इस बार मलायका ने सोशल मीडिया पर अर्जुन संग न तो कोई फोटो शेयर की और न पोस्ट शेयर करके उसे बधाई दी, जिसके बाद इनके ब्रेकअप की खबरों को एक बार फिर से हवा मिली। कुछ समय पहले ही मलायका के अर्जुन के साथ ब्रेकअप के बारे में एक सूत्र ने दावा किया था, 'मलायका और अर्जुन का रिश्ता बहुत खास था और दोनों एक-दूसरे के दिलों में खास जगह बनाए रखेंगे। उन्होंने अलग होने का फैसला किया है और इस मामले में एक सम्मानजनक चुप्पी बनाए रखेंगे। वे किसी को भी अपने रिश्ते को घसीटने और उसका विश्लेषण करने की अनुमति नहीं देंगे।' सूत्र ने आगे कहा था, 'उनका एक लंबा और प्यार भरा रिश्ता था, जो दुर्भाग्य से अब खत्म हो चुका है। इसका मतलब यह नहीं है कि उनके बीच कोई खटास है। वे एक-दूसरे का बहुत सम्मान करते हैं और एक-दूसरे की ताकत रहे हैं। पिछले कुछ सालों में उन्होंने अपने रिश्ते को बहुत सम्मान दिया है। अलग होने का फैसला करने के बावजूद वे को वैसा ही सम्मान। एक-दूसरे देते रहेंगे। वे दोनों सालों से एक गंभीर रिश्ते में थे और उन्हें उम्मीद है कि लोग इस भावनात्मक समय में उन्हें परेशान नहीं करेंगे।

एक इंटरव्यू में मलायका ने पूर्व पति अरबाज खान के साथ बेटे अरहान खान के सह-पालन के बारे में खुलकर बात की है। मलायका ने बताया कि बेटे की परवरिश में शुरुआती दिनों में थोड़ी मुश्किलें हुई थीं और कहा कि जिंदगी ऐसी ही है। उसने बताया, 'हम दोनों जानते थे कि बाकी सब चीजों के बावजूद और दो एडल्ट्स के बीच जो कुछ भी हुआ हो, उसका असर कभी बच्चे पर नहीं पड़ना चाहिए। हमने को पेरेंटिंग का एक बहुत ही अनुकूल तरीका निकाला है। 'मैं हमेशा इस चीज का ध्यान रखती थी कि अरहान को उसके अधिकारों का एहसास हो। वह खुद से अपने काम करना सीखे।' उसने उससे बेटे को समाया है कि उमे अपने दस पर सब कुछ करना होगा।

स्वत्वाधिकारी ***'बात हिन्दुस्तान की'*** *(पाक्षिक) पत्रिका के लिए मुद्रक व प्रकाशक श्रीमती सोनी कुमारी झा, 23 रामकुमार गांगुली लेन, 2रा तल्ला कमरा नं. 203, पोस्ट- बी. गार्डेन, शिवपुर, हावड़ा-711103 (प. बंगाल) फोन नं.: 8902221434 से प्रकाशित एवं चपला मुद्रण, 2/3/1, रामजी हजरा लेन, हावड़ा-711101 से मुद्रित, सम्पादक-* ***उमेश तिवारी,*** *फोन- 8420899919 पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी , ईमेल/वेबसाईट-www.baathindustanki@gmail.com*

(Owner, Printer & Publisher of 'Baat Hindustan Ki' : Smt. Soni kumari Jha, 23, Ramkumar Ganguly Lane, 2nd floor, room no-203, PO : B.Garden, Shibpur, Howrah-711103, Mo. 9798848926 & Printed from CHAPLA MUDRAN 2/3/1 Ramji Hazra Lane, Shibpur, Howrah-711101, Editor : **Umesh Tiwari** Mo. 8420899919, Email/Website : www.baathindustanki@gmail.com)